

# दानियेल की पुस्तक - संख्या सतहत्तर

भविष्यसूचक समांतर का अनावरण: 1863 में लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म और बाइबिलीय टाइपोलाजी

Jeff Pippenger  
2024-02-10

1863 में लाओदीकियाई एडवेंटवाद के विद्रोह को यरीहो के पुनर्निर्माण के विरुद्ध घोषित शाप द्वारा प्रतीकित किया गया है।

और यहोशू ने उसी समय उन्हें शपथ दिलाकर कहा, "जो कोई प्रभु के सामने उठकर इस नगर यरीहो का निर्माण करे, वह शापित हो; वह उसकी नींव अपने पहिलौठे के मूल्य पर डालेगा, और अपने सबसे छोटे पुत्र के मूल्य पर उसके फाटक स्थापित करेगा।" यहोशू 6:26.

1863 में लाओदीकियाई एडवेंटवाद का विद्रोह, राजमिस्त्रियों द्वारा कोने के पत्थर को ठुकराने से प्रतिरूपित हुआ है।

यीशु ने उनसे कहा, क्या तुमने शास्त्रों में कभी नहीं पढ़ा: 'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना, वही कोने का मुख्य पत्थर हो गया; यह प्रभु की ओर से हुआ है, और यह हमारी आँखों में अद्भुत है'? इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, परमेश्वर का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा, और एक जाति को दिया जाएगा जो उसके फल उत्पन्न करेगी। मत्ती 21:42, 43.

1863 में लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म के विद्रोह को हारून के सोने के बछड़े द्वारा प्रतिरूपित किया गया है।

क्योंकि उन्होंने मुझ से कहा, हमारे लिए देवता बना, जो हमारे आगे-आगे चलें; क्योंकि इस मूसा के विषय में, जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया, हमें नहीं मालूम कि उसका क्या हुआ। और मैंने उनसे कहा, जिसके पास कोई सोना हो, वह उसे उतार ले। तो उन्होंने मुझे दे दिया; तब मैंने उसे आग में डाल दिया, और यह बछड़ा निकल आया। और जब मूसा ने देखा कि लोग नग्न हो गए हैं; (क्योंकि हारून ने उन्हें उनके शत्रुओं के सामने उनकी लज्जा के लिए नग्न कर दिया था)। निर्गमन 32:23-25.

1863 में लाओदीकियाई एडवेंटवाद के विद्रोह को यारोबाम के दो सोने के बछड़ों द्वारा प्रतीकित किया गया है।

यदि यह प्रजा यरूशलेम में यहोवा के घर में बलिदान चढ़ाने को ऊपर जाए, तो इस प्रजा का मन फिरकर अपने स्वामी, अर्थात् यहूदा के राजा रहूबियाम, की ओर हो जाएगा; और वे मुझे मार डालेंगे, और फिर यहूदा के राजा रहूबियाम के पास लौट जाएंगे। तब राजा ने परामर्श किया, और सोने के दो बछड़े बनाए, और उनसे कहा, "तुम्हारे लिए यरूशलेम को ऊपर जाना बहुत कठिन है; हे इस्राएल, देख, ये तेरे देवता हैं, जिन्होंने तुझे मिस्र देश से निकालकर ऊपर लाया।" और उसने एक को बेतेल में रखा, और दूसरे को दान में स्थापित किया। 1 राजा 12:27-29.

1863 में लाओदीकियाई एडवेंटवाद के विद्रोह का प्रतिरूप उस यहूदा से आए नबी में देखा जाता है, जो गधे और सिंह के बीच मर गया था।

और ऐसा हुआ कि जब उसने रोटी खा ली और पी लिया, तब उसने उसके लिए गधे पर काठी कसी—अर्थात् उस भविष्यद्वक्ता के लिए जिसे वह वापस ले आया था। और जब वह चला गया, तो मार्ग में एक सिंह उससे मिला और उसने उसे मार डाला; और उसकी लाश मार्ग में डाल दी गई, और गधा उसके पास खड़ा रहा, और सिंह भी उस लाश के पास खड़ा रहा। 1 राजा 13:23, 24.

1863 में लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म के विद्रोह को प्राचीन इस्राएल की उस दसवीं परीक्षा का प्रतिरूप माना गया है, जिसने उनकी मरुभूमि में भटकने की शुरुआत की।

परन्तु जितना सत्य यह है कि मैं जीवित हूँ, उतना ही निश्चित है कि सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण होगी। क्योंकि उन सब मनुष्यों ने, जिन्होंने मेरी महिमा और वे चमत्कार देखे जो मैंने मिस्र देश और मरुभूमि में किए, और जिन्होंने अब तक दस बार मुझे परखा है और मेरी वाणी न सुनी है; निश्चय वे उस देश को, जिसकी शपथ मैंने उनके पितरों से खाई थी, कभी न देखेंगे; और जिन्होंने मुझे उकसाया, उनमें से कोई उसे न देखेगा। परन्तु मेरा दास कालेब, क्योंकि उसमें भिन्न आत्मा थी और उसने पूरी रीति से मेरा अनुसरण किया है, उसे मैं उस देश में ले जाऊँगा जहाँ वह गया था; और उसकी सन्तान उसे अधिकार में लेगी। गिनती 14:21-23.

प्रेरित पौलुस ने सिखाया:

अब ये सब बातें उनके लिए दृष्टांतस्वरूप घटीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये लिखी गई हैं, जिन पर जगत के अंतिम युग आ पहुँचे हैं। 1 कुरिन्थियों 10:11.

उस भविष्यसूचक सिद्धांत पर टिप्पणी करते हुए, बहन व्हाइट ने कहा:

“प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं में से प्रत्येक ने अपने समय के लिए कम, और हमारे समय के लिए अधिक कहा, ताकि उनका भविष्यद्वचन हमारे लिए प्रभावी हो। ‘ये सब बातें उन पर दृष्टांत के लिये घटीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये लिखी गईं, जिन पर जगत के अन्तिम समय आ पहुँचे हैं।’ 1 Corinthians 10:11. ‘उन्होंने यह प्रकट किया कि वे अपनी नहीं, परन्तु तुम्हारी सेवा के लिये उन बातों की सेवा कर रहे थे, जिनका अब तुम्हें उन लोगों के द्वारा समाचार दिया गया है जिन्होंने स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें सुसमाचार सुनाया; और इन बातों को स्वर्गदूत भी देखने की लालसा रखते हैं।’ 1 Peter 1:12....”

“बाइबल ने इस अंतिम पीढ़ी के लिए अपने खजानों को संचित किया है और उन्हें एक साथ बाँधकर सुरक्षित रखा है। पुराने नियम के इतिहास की सभी महान घटनाएँ और गंभीर व्यवहार घटित हो चुके हैं, और इन अंतिम दिनों में कलीसिया में पुनः घटित हो रहे हैं।” Selected Messages, book 3, 338, 339.

यशायाह के अनुसार, अंतिम वर्षा का संदेश एक संदेश ही है, क्योंकि वह बताता है कि दुष्ट लोग उसे सुनने से इनकार करेंगे, और वह उस संदेश का वर्णन "रेखा पर रेखा" के रूप में करता है।

वह किसे ज्ञान सिखाएगा? और किसे शिक्षा का बोध कराएगा? क्या उन्हें जो दूध छुड़ाए गए हैं, और जो स्तनों से अलग किए गए हैं? क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा; पंक्ति पर पंक्ति, पंक्ति पर पंक्ति; यहाँ थोड़ा, और वहाँ थोड़ा। क्योंकि वह हकलाते हुए होंठों और दूसरी भाषा के द्वारा इस प्रजा से बोलेगा। जिनसे उसने कहा, यही वह विश्राम है जिससे तुम थके-मांदों को विश्राम दे सकते हो; और यही ताज़गी है; तौभी उन्होंने सुनना न चाहा। परन्तु यहोवा का वचन उनके लिये आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा; पंक्ति पर पंक्ति, पंक्ति पर पंक्ति; यहाँ थोड़ा, और वहाँ थोड़ा ठहरा; ताकि वे जाएँ, और पीछे की ओर गिरें, और टूट जाएँ, और फँसें, और पकड़ लिए जाएँ। यशायाह 28:9-13।

हमने अभी जिन छह रेखाओं की पहचान की है, और निस्संदेह अन्य भी हैं जिनकी ओर हमने संकेत नहीं किया, उनमें से एक 1863 पर जोर देती है, जो एक क्रमिक परीक्षा का अंत था, जिसका परिणाम जंगल में भटकना था। दो इस बात पर जोर देती हैं कि पूर्व वाचा-जन को पार कर दिया गया और उनकी जगह एक नए चुने हुए लोगों ने ले ली। एक उस पुनर्निर्माण पर शाप को चिह्नित करती है जो उस वस्तु का था जिसे परमेश्वर के शाप के अधीन वैसा ही नष्ट और परित्यक्त छोड़ दिया जाना था, और दूसरी वहाँ लौटने पर शाप को चिह्नित करती है जहाँ जाने की मनाही थी। दो, दस आज्ञाओं की दो पट्टिकाओं की नकली प्रतियों के उदाहरण प्रस्तुत करती हैं; वे पट्टिकाएँ हबक्कुक की दो पट्टिकाओं का प्रतिनिधित्व करती थीं।

हारून और यारोबाम के सोने के बछड़े ईर्ष्या की एक नकली मूर्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसने नकली 1863 चार्ट का प्रतिनिधित्व किया था। साथ रखे जाने पर, हारून और यारोबाम के ये दो गवाह सिखाते हैं कि हबक्कूक की दो पट्टिकाएँ उसी प्रकार एक ही पट्टिका का प्रतिनिधित्व करती हैं, जैसे दस आज्ञाओं की दो पट्टिकाएँ परमेश्वर की एक ही व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती हैं। साथ मिलकर वे एक प्रतीक बन जाते हैं, जो साथ रखे जाने पर दो से मिलकर बना होता है। परमेश्वर की व्यवस्था की दो पट्टिकाओं की वही भविष्यवाणीगत गतिशीलता हबक्कूक की दो पट्टिकाओं में भी विद्यमान है, और मिलकर हारून और यारोबाम के नकली प्रतिरूप उस भविष्यवाणीगत घटना को संबोधित करते हैं।

एडवेंटवाद की पहली पीढ़ी का चित्रण यहजेकेल अध्याय आठ की 'ईर्ष्या की प्रतिमा' से किया गया है। यहजेकेल के अध्याय आठ में, छठे वर्ष के छठे महीने के पाँचवें दिन से जो दर्शन आरम्भ होता है, वह अध्याय नौ तक चलता है, जहाँ एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी का प्रतिनिधित्व किया गया है। अध्याय नौ में मुहरबंदी के इस चित्रण का उल्लेख करते समय, बहन व्हाइट परमेश्वर के चरित्र के उस गुण को सम्मिलित करती हैं, जो यह दर्शाता है कि आज्ञा न मानने वालों का न्याय परमेश्वर तीसरी और चौथी पीढ़ी में करता है। इसलिए वह उस सत्य को भी समाहित करती हैं जो सीधे दूसरी आज्ञा से संबंधित है—वह आज्ञा जो मूर्ति-पूजा को निषिद्ध करती है, जैसे हारून और यारोबाम के सोने के बछड़े।

'और उसने उस व्यक्ति को पुकारा जो पटसन के वस्त्र पहने हुए था और जिसकी कमर से लेखक की दवात लटकी थी; और प्रभु ने उससे कहा, नगर के बीच में, यरूशलेम के बीच से होकर निकल, और उन पुरुषों के माथों पर एक चिह्न लगा दे जो वहाँ के बीच में किए जाने वाले सब घृणित कार्यों के कारण आहें भरते और रोते हैं। और दूसरों से उसने मेरे सुनते कहा, तुम उसके पीछे-पीछे नगर में होकर जाओ, और प्रहार करो; न किसी को बखाना, न दया करना; बूढ़ों और जवानों, कुमारियों, छोटे बच्चों और स्त्रियों—सबको सर्वथा मार डालो; पर जिस किसी पर वह चिह्न हो उसके निकट न जाना; और मेरे पवित्रस्थान से आरम्भ करना। तब उन्होंने उन वृद्ध पुरुषों से आरम्भ किया जो घर के सामने थे।'

यीशु जल्द ही स्वर्गीय पवित्रस्थान के दयासिंहासन को छोड़कर प्रतिशोध के वस्त्र पहनने वाले हैं, और परमेश्वर द्वारा दी गई ज्योति का प्रत्युत्तर न देने वालों पर अपने न्यायों द्वारा अपना क्रोध उंडेलेंगे। 'क्योंकि दुष्ट कर्म का दंड शीघ्र नहीं दिया जाता, इस कारण मनुष्यों के पुत्रों का मन बुराई करने के लिए उनके भीतर दृढ़ हो जाता है।' प्रभु ने उनके प्रति जो धैर्य और दीर्घ सहनशीलता दिखाई है, उससे कोमल होने के बजाय, जो परमेश्वर का भय नहीं मानते और सत्य से प्रेम नहीं करते, वे अपने दुष्ट मार्ग में अपने हृदयों को और दृढ़ कर लेते हैं। परन्तु परमेश्वर की सहनशीलता की भी सीमाएँ हैं, और बहुत से लोग इन सीमाओं को लांघ रहे हैं। वे अनुग्रह की सीमाओं से आगे निकल गए हैं; इसलिए परमेश्वर को हस्तक्षेप कर अपने ही सम्मान की रक्षा करनी होगी।

अमोरियों के विषय में प्रभु ने कहा: 'चौथी पीढ़ी में वे फिर यहाँ आएँगे, क्योंकि अमोरियों का अधर्म अभी परिपूर्ण नहीं हुआ है।' यद्यपि यह जाति अपनी मूर्तिपूजा और भ्रष्टता के कारण विशेष रूप से जानी जाती थी, तौभी उसने अपने अधर्म का प्याला अभी तक नहीं भर दिया था, और परमेश्वर उसके सर्वनाश का आदेश नहीं देने वाले थे। लोगों को दिव्य शक्ति का प्रगटीकरण स्पष्ट रीति से देखना था, ताकि उनके पास कोई बहाना न रह जाए। दयालु सृष्टिकर्ता उनके अधर्म को चौथी पीढ़ी तक सहने को तैयार थे। तब, यदि भलाई की ओर कोई परिवर्तन दिखाई न दे, तो उसके दण्ड उन पर आ पड़ने वाले थे।

अचूकता के साथ अनन्त परमेश्वर अब भी सभी राष्ट्रों का हिसाब रखता है। जब तक वह पश्चाताप के लिए बुलाहटों के साथ अपनी दया प्रदान करता रहता है, तब तक यह हिसाब खुला रहेगा; परन्तु जब संख्याएँ उस सीमा तक पहुँच जाती हैं जिसे परमेश्वर ने निर्धारित किया है, उसके क्रोध की कार्यवाही आरंभ हो जाती है। हिसाब बंद कर दिया जाता है। दैवी धैर्य समाप्त हो जाता है। अब उनके पक्ष में दया की कोई विनती नहीं रहती।

भविष्यद्वक्ता ने युगों पर दृष्टि डालते हुए अपने दर्शन में इस समय को देखा था। इस युग के राष्ट्र अभूतपूर्व दयाओं के प्राप्तकर्ता रहे हैं। स्वर्ग की सर्वोत्तम आशीषें उन्हें दी गई हैं, परन्तु उनके विरुद्ध बढ़ा हुआ अहंकार, लोभ,

मूर्तिपूजा, परमेश्वर के प्रति तिरस्कार और घोर कृतघ्नता लिखी हुई हैं। वे तेजी से परमेश्वर के साथ अपना लेखा बंद कर रहे हैं।

पर जो मुझे काँपने पर विवश करता है, वह यह तथ्य है कि जिन्हें सबसे बड़े प्रकाश और विशेषाधिकार मिले थे, वे प्रचलित अधर्म से दूषित हो गए हैं। अपने चारों ओर के अधर्मियों से प्रभावित होकर, अनेक लोग, यहाँ तक कि जो सत्य का अंगीकार करते हैं, ठंडे पड़ गए हैं और बुराई की प्रबल धारा से बहा दिए गए हैं। सच्ची भक्ति और पवित्रता का जो व्यापक उपहास किया जा रहा है, वह उन लोगों को, जो परमेश्वर के साथ घनिष्ठ रूप से नहीं जुड़े हैं, उसकी व्यवस्था के प्रति अपनी श्रद्धा खो देने की ओर ले जाता है। यदि वे प्रकाश का अनुसरण कर रहे होते और हृदय से सत्य का पालन कर रहे होते, तो जब इसे इस प्रकार तुच्छ समझकर अलग रख दिया जाता है, तब यह पवित्र व्यवस्था उन्हें और भी अधिक मूल्यवान प्रतीत होती। जैसे-जैसे परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति अनादर अधिक प्रकट होता जाता है, उसके पालन करने वालों और संसार के बीच की विभाजन-रेखा उतनी ही स्पष्ट होती जाती है। जिस प्रकार एक वर्ग में दैवी आज्ञाओं के प्रति तिरस्कार बढ़ता है, उसी प्रकार दूसरे वर्ग में दैवी आज्ञाओं के प्रति प्रेम बढ़ता जाता है।

संकट तीव्र गति से निकट आ रहा है। तेजी से बढ़ते आँकड़े यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर के न्याय के आगमन का समय लगभग आ पहुँचा है। यद्यपि वह दण्ड देने में अनिच्छुक है, तथापि वह दण्ड देगा, और वह भी शीघ्र। जो प्रकाश में चलते हैं वे निकट आती हुई विपत्ति के चिन्ह देखेंगे; परन्तु उन्हें विनाश की शांत, उदासीन प्रतीक्षा में बैठ नहीं जाना चाहिए, इस विश्वास से अपने आपको दिलासा देते हुए कि न्याय के दिन परमेश्वर अपने लोगों को शरण देगा। कदापि नहीं। उन्हें यह समझना चाहिए कि दूसरों को बचाने के लिए परिश्रमपूर्वक कार्य करना उनका कर्तव्य है, और सहायता के लिए दृढ़ विश्वास के साथ परमेश्वर की ओर देखना चाहिए। 'धर्मो मनुष्य की प्रभावशाली प्रार्थना बहुत कुछ कर दिखाती है।'

धर्मपरायणता का खमीर अपनी शक्ति पूरी तरह नहीं खो चुका है। जब कलीसिया पर संकट और निराशा अपनी चरम सीमा पर होंगे, तब प्रकाश में खड़े वे थोड़े लोग देश में किए जा रहे घृणित कर्मों के कारण आहें भरेंगे और रोएंगे। परंतु विशेष रूप से उनकी प्रार्थनाएँ कलीसिया के लिए उठेंगी, क्योंकि उसके सदस्य संसार की रीति पर चल रहे हैं।

इन थोड़े से विश्वासयोग्य लोगों की गंभीर प्रार्थनाएँ व्यर्थ नहीं जाएँगी। जब प्रभु प्रतिशोधकर्ता के रूप में प्रकट होंगे, तब वह उन सब के रक्षक के रूप में भी आएँगे जिन्होंने विश्वास को उसकी पवित्रता में अक्षुण्ण रखा है और अपने को संसार से निष्कलंक रखा है। इसी समय परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की है कि वह अपने चुने हुएों का बदला लेगा, जो रात-दिन उसकी ओर पुकारते हैं, यद्यपि वह उनके साथ दीर्घकाल तक धैर्य धरता है।

"आज्ञा यह है: 'नगर के बीच से, यरूशलेम के बीच से होकर निकलो, और उन मनुष्यों के माथों पर एक चिन्ह लगा दो जो वहाँ के बीच में किए जाने वाले सब घृणास्पद कामों के कारण आहें भरते और रोते हैं।' ये आहें भरने और रोने वाले लोग जीवन के वचन लोगों के सामने रखते आए थे; उन्होंने ताड़ना दी थी, परामर्श दिया था, और विनती की थी। जो लोग परमेश्वर का अपमान कर रहे थे, उनमें से कुछ ने पश्चाताप किया और उसके सामने अपने हृदयों को दीन किया। परन्तु प्रभु की महिमा इस्राएल से विदा हो गई थी; यद्यपि बहुतों ने अब भी धर्म के बाहरी रूपों को बनाए रखा, उसकी सामर्थ्य और उपस्थिति नहीं पाई जाती थी।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 207-210.

यहेजकेल द्वारा प्रस्तुत मुहरबंदी के दर्शन का सही ढंग से विवेचन करने के लिए, एडवेंटवाद की चार पीढ़ियों को समझना आवश्यक है। बहन व्हाइट हमारे चुने हुए अनुच्छेद की शुरुआत सीधे यहेजकेल अध्याय नौ का उल्लेख करके करती हैं, और हमारे चयनित भाग का समापन भी यहेजकेल अध्याय नौ के प्रत्यक्ष संदर्भ के साथ होता है। उस अनुच्छेद में वह यहेजकेल के विषय में कहती हैं, "भविष्यद्वक्ता ने युगों के पार दृष्टि डालते हुए, अपने सामने इस समय को प्रस्तुत पाया।" यहेजकेल ने उन परिस्थितियों को देखा जो एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के दौरान घटित होती हैं।

पिछले लेख में हमने "भविष्यवाणी की आत्मा" के तीन विशिष्ट उद्धरणों के माध्यम से यह दिखाया कि यशायाह के "एफ्रैम के मतवाले," जिन्हें इस खंड में "प्राचीन पुरुष" के रूप में पहचाना गया है और जो दोनों ही खंडों में यरूशलेम (एडवेंटिज़्म) के नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं, यह नहीं देख पाते कि पूर्व वर्षों की तरह परमेश्वर की शक्ति का एक शक्तिशाली प्रगटीकरण होने वाला है। इस खंड में वही परमेश्वर की शक्ति का प्रगटीकरण, जिसे देखने से वे इनकार करते हैं, उनके ऊपर लाए गए दैवी न्याय के एक भाग के रूप में घटित होगा, क्योंकि कहा गया है कि, "लोगों को दैवी शक्ति का प्रगटीकरण एक उल्लेखनीय ढंग से देखना था, ताकि उनके पास कोई बहाना न रहे।"

लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म 11 सितंबर, 2001 को फुहारों के रूप में शुरू हुई अंतिम वर्षा के प्रकट होने को देखने से इनकार करता है, परन्तु वे उस वर्षा के चरम को तब देखेंगे जब अंतिम दिनों में 'आधी रात की पुकार' का संदेश दोहराया जाएगा। वह संदेश तीसरी हाय का इस्लाम है। क्या प्राचीन इस्राएल के नेतृत्व ने, जिन्होंने अभी-अभी अपने मसीह को क्रूस पर चढ़ाया था, पेन्तेकोस्त के दिन जब पवित्र आत्मा उंडेला गया था, उसे नहीं देखा था?

यह पद्यांश कलीसिया की पहचान करता है, जिसे संदर्भ के अनुसार यहजेकेल ने यरूशलेम के रूप में चित्रित किया है; और कलीसिया (यरूशलेम) के भीतर के सदस्यों के विपरीत एक "छोटा दल" रखा गया है, जिन्हें "ज्योति में चलने वाले" और "विश्वासी थोड़े" भी कहा गया है। बाइबल सिखाती है कि "बहुतों" को बुलाया जाता है, पर "थोड़े" चुने जाते हैं। इस पद्यांश के विषय में परमेश्वर का वह क्रोध भी सम्मिलित है जो उसके लोगों पर आता है। लोगों ने अपने ही ऊपर न्याय को बुला लिया है, परन्तु परमेश्वर विशेष रूप से इस बात पर जोर देता है कि विनाश का कार्य उसके स्वर्गदूत ही संपन्न करते हैं। परमेश्वर कभी झूठ नहीं बोलता, और उसने यह प्रतिज्ञा की है कि मनुष्यों के अधर्म का दण्ड वह तीसरी और चौथी पीढ़ी तक देता है। न्याय के क्रियान्वयन को परमेश्वर के सिवा किसी और को ठहराना, उसके चरित्र का इनकार करना है और यह संकेत करना है कि वह झूठा है।

यह खंड बताता है कि जब यहजेकेल के विनाशक स्वर्गदूत यरूशलेम से होकर गुजरना आरम्भ करते हैं, तभी "उसके क्रोध का कार्य आरम्भ होता है।" परमेश्वर का क्रोध यरूशलेम से शुरू होता है, जो उसकी कलीसिया है, अर्थात् लाओदिकियाई एडवेंटिज़्म।

क्योंकि अब वह समय आ पहुंचा है कि न्याय परमेश्वर के घर से आरम्भ हो; और यदि पहले हम से आरम्भ होता है, तो जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते, उनका अंत क्या होगा? 1 पतरस 4:17.

परमेश्वर का क्रोध परमेश्वर के स्वर्गदूतों द्वारा पूरा किया जाता है, और जब उनका कार्य आरम्भ होता है, तो उन्हें यह आज्ञा दी जाती है: "सब पर प्रहार करो; न तो तुम्हारी आँखें उन पर दया करें, और न तुम कुछ तरस खाओ; बूढ़ों और जवानों, दोनों को—कुँवारियों, छोटे बच्चों और स्त्रियों को पूरी तरह मार डालो; पर जिस किसी पर चिह्न हो, उसके निकट न जाना; और मेरे पवित्रस्थान से आरम्भ करना।" परमेश्वर का क्रोध पवित्र स्वर्गदूतों के द्वारा कार्यान्वित होता है, और यहाँ हम यह इंगित करना चाहते हैं कि परमेश्वर के क्रोध की सेवकाई का प्रारम्भ चौथी पीढ़ी में होता है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

और ऐसा होगा कि प्रभु के बलिदान के दिन मैं राजकुमारों को, और राजा के पुत्रों को, और उन सब को जो विदेशी वस्त्र पहने हुए हैं, दण्ड दूँगा। उसी दिन मैं उन सब को भी दण्ड दूँगा जो दहलीज़ पर कूदते हैं, जो अपने स्वामियों के घरों को हिंसा और छल से भर देते हैं। और उस दिन यह होगा, प्रभु कहता है, कि मछली फाटक की ओर से चीत्कार का शोर होगा, दूसरे भाग से विलाप, और पहाड़ियों की ओर से भारी ध्वंस का शोर। विलाप करो, हे मक्तेश के निवासियों, क्योंकि सब व्यापारी लोग काट डाले गए हैं; जो चाँदी उठाए फिरते हैं वे सब नाश कर दिए गए हैं। और उस समय यह होगा कि मैं दीपक लेकर यरूशलेम की छानबीन करूँगा, और उन पुरुषों को दण्ड दूँगा जो अपनी सुस्ती में जमे बैठे हैं, जो अपने हृदय में कहते हैं, 'प्रभु न भलाई करेगा, न बुराई करेगा।' सपन्याह 1:8-12.